पत्र

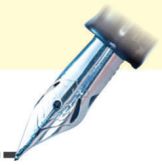

मई अंक में कुमार विनोद के ग़ज़ल संग्रह पर प्रस्तावना बड़ी अच्छी लगी। ऐसा अनौपचारिक विमर्श मजा देता है। उपसंहार का शीर्षक बड़ा दिलचस्प है। अन्नपूर्णा मंडल एवं पल्लव का पुनःपाठ एक नए तरह का तजुर्बा देता है। किशोरी अमोणकर पर राजकुमार कुम्भज का स्मृति शेष स्तंभ बहुत अच्छा है। पिछले अंक के बाबूलाल शुक्ल एवं बालेन्दु शेखर तिवारी की ही तरह। इन्कार का अधिकार एवं कुंवर नारायण की कविताओं पर आलेख भी पठनीय हैं। जहीर कुरेशी ने दर्द साहब पर बहुत अच्छा आलेख लिखा है। यश मालवीय, कुरेशी साहब आदि के गद्य बहुत ताजगी देते हैं।

जून अंक मुक्तिबोध पर एकाग्र देखकर मन प्रसन्न हो गया। मुक्तिबोध परवर्ती पीढ़ी पर सर्वाधिक प्रभाव डालने वाले कठिन कवि हैं। पत्रिका उन्हें समझने का कोई सूत्र पाठकों को दे पाएगी। रतन कुमार पांडेय ने मुंबई से अनभै का 160 पृष्ठों का मुक्तिबोध विशेषांक निकाला है। जमशेदपुर से कविता का 64 पृष्ठों का मुक्तिबोध अंक मुकेश रंजन द्वारा प्रस्तावित है। शांति निकेतन में मुक्तिबोध पर मार्च में दो दिन की परिचर्चा भी चली। अक्षरपर्व में मुक्तिबोध के सभी संभावित पक्षों पर विचार करने का प्रयास हुआ है। अंक बहुत उपयोगी है। बची हुई सामग्री फिर कभी विशेषांक-2 के रूप में भी संपादित करें तो शोधार्थियों को नई पगडंडी मिल सके। मुक्तिबोध की समझदारी और ईमानदारी कायल करती है। कविवर ज्ञानेन्द्रपति से दिसम्बर 16 में मुक्तिबोध पर देवघर में सुनने का सुअवसर मिला।

डा.शंकरमोहन झा, हिन्दी विद्यापीठ, देवघर 814115

मई अंक में ललितजी ने कुमार विनोद के नवीनतम ग़ज़ल संग्रह सज़दे में आकाश का नूतन बिम्ब प्रतीकों के आधार पर जो मूल्यांकन किया है, वह परम आस्वाद्य है। उपसंहार में सर्वमित्राजी ने रूस और अमरीका जैसी विश्व की दुर्धर्ष महाशक्तियों की बदगुमानी के परिणामस्वरूप उत्पन्न तीसरे महायुद्ध की भयावह स्थिति की आगाही की है। आपका यह सार्थक प्रश्न सोचने पर बाध्य करता है कि क्या विश्वशांति कायम करने के लिए युद्ध की विभीषिका अपरिहार्य है? दुनिया गंभीरता से इस पर सोचे।

भूले-बिसरे शायर शीर्षक स्तंभ का आगाज़ स्वागतेय है। भाई जहीर कुरेशी ने अपनी नज़र से खुद को देखने वाले शाइर शेख कदीर कुरेशी दर्द की ग़ज़लगोई का, पर्याप्त उद्धरणों के प्रकाश में, संतोषजनक आकलन किया है। वीरेन्द्र सरल का बाबूलाल का जीव पढ़कर प्रसिद्ध व्यंग्यकार स्व.हरिशंकर परसाई की रचना भोलाराम का जीव की याद आ गई। कहानी के रूप में बाबूलाल का जीव गुदगुदाता है, तो व्यंग्य के रूप में पाठक को तिलमिलाता भी है।

डा.शोभा निगम ने विभिन्न रामकाव्यों के संदर्भ से कैकेयी के व्यक्तित्व का अच्छा मूल्यांकन, आकलन किया है। वाल्मीकि रामायण, कंब रामायण, जैन रामायण, कृत्तिवास-बांग्ला रामायण, गुप्तजी रचित साकेत आदि कई रामकाव्यों के आधार पर कैकेयी का चरित्रांकन करते हुए उसके सहज अपराध को क्षम्य ही माना है। पूरे लेख में लेखिका की असाधारण शोधदृष्टि का परिचय मिलता है। इत्यलम।

प्रो. भगवानदास जैन, अहमदाबाद-382445

अक्षर पर्व का मुक्तिबोध पर निकला अंक साहित्य जगत मे मील का पत्थर तो है ही ,एक संग्रहणीय अंक भी है। यह अंक निकालने के लिए व रचना चयन के लिए आप बधाई के पात्र हैं।

सुधा गोयल ,बुलन्दशहर

जून के मुक्तिबोध अंक की प्रस्तावना में विलक्षण सृजन के कवि मुक्तिबोध के संबंध में कुछ अनकही बातों पर ललित सुरजन जी ने रोशनी डाली है। दरअसल मुक्तिबोध के बारे में बहुत जान लेने के बाद भी बहुत कुछ जानना अंततः शेष रह ही जाता है। मुक्तिबोध के सृजन और चिंतन की इतनी अधिक परतें हैं कि वे खुलती ही चली जाती हैं। उनकी अभिव्यक्ति के फलक का ओर-छोर नहीं है। कितने ही गहरे उतरे, थाह नहीं मिलती, यह अंक मुक्तिबोध के रचनाधर्म के विभिन्न पक्षों को रेखांकित और व्याख्यायित करने वाला अंक है। मैं समझता हूं इस अंक में प्रकाशित सामग्री के माध्यम से मुक्तिबोध को विभिन्न आयामों के परिप्रेक्ष्य में ठीक से समझने में तो मदद मिलेगी ही, साथ ही शोधकर्ताओं के लिए जानकारी के नए द्वार भी खुलेंगे। जहां तक मेरी जानकारी है, पत्रिकाओं के अब तक जो विशेषांक गहन-गंभीर-अप्रतिम कवि मुक्तिबोध के कृत्तिव पर निकले हैं, उनमें अक्षर पर्व का यह विशेषांक अधिक व्यापक और अद्यतन है। मुक्तिबोध के सृजन को लेकर उठने वाले प्रायः सभी प्रश्नों के उत्तर इस विशेषांक में समाहित हैं। आपको और सभी लेखकों को एक अच्छे शोधपूर्ण विशेषांक के लिए बधाई।

युगेश शर्मा, भोपाल